अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

लोक हस्तशिल्प व व्यापार
Peoples Handicraft & Trade

अध्याय शीर्षक	लोक हस्तशिल्प व व्यापार
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन / **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण / मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ / साभार / सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Peoples Handicraft & Trade**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

लोक हस्तशिल्प व व्यापार **Peoples Handicraft & Trade**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

लोक हस्तशिल्प व व्यापार **Peoples Handicraft & Trade**

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – लोक हस्तशिल्प व व्यापार का संक्षिप्त वर्णन

लोक हस्तशिल्प व व्यापार **Peoples Handicraft & Trade**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

लोक शिल्प

लोक शिल्प के अन्तर्गत अनेक वस्तुएं मुख्यतया मिट्टी, धातु, कपड़ा, चमड़ा, काष्ठ, गोबर, बान्स की खपच्चियों तथा अन्य उपलब्ध कच्चे माल से बनायी जाती हैं।

मिट्टी की कला (मृण्यर्मि शिल्प) के अन्तर्गत, विवाह के समय झूमर, महालक्ष्मी पूजन पर हाथी, गणगौर पूजन पर गनगौर, सन्करात पर हाथी, धोडा, गढिया, सावन के अवसर पर रन्गीन मटकियां एवम् कलश तथा दीवाली पर दीपक, दीवट एवम् दीप धारिणी महिलाओं की मूर्तियां रन्ग बिरन्गी बनाते हैं।

धातु शिल्प के अन्तर्गत सोने, चान्दी या गिलट के कलात्मक आभूषण पीतल के सरौता आदि बनाये जाते हैं। श्रीनगर (महोबा) तथा ललितपुर में धातु की मूर्तियां तथा खिलौने बनाये जाते हैं। परिवारों में अकती के अवसर पर कपड़े की पुतरा पुतरियां (डाल), मौराई छठ पर विजना बटुआ, कुड़री तथा कथरी बनाने की लोक परम्परा है।

काष्ठ शिल्प में नक्काशीदार पूजा–चौकियां, सिन्हासन, इत्रदान, खिलौने, आभूषण–पात्र, दरवाजे चौखट आदि कलात्मक बनाने की परम्परा है। बान्स की खपच्चियों से सुअटा, ताजिया, मन्दिरों के विमान आदि बनाने की परम्परा है।

गोबर से गणेश बनाये जाते हैं। परिवारों में स्थानीय उपलब्ध कच्चे माल से डाब, मंजू, सरकंडा, बान्स या खजूर से अनेक गृह उपयोगी वस्तुयें बनाते है। इस प्रकार बुन्देलखण्ड की लोक कलाओं में कला की बहुरन्गी झांकी देखने को मिलती है, जो यहां के निवासियों की कलाप्रियता तथा सांस्कृतिक समृद्धि का परिचायक हैं।

+1, +2

बुन्देलखण्डी जूता

बान्दा और आसपास का क्षेत्र और अगर पूर्ण रूप से देखा जाए तो बुन्देलखण्ड, लतकरि़यां, बुन्देलखण्डी जूता और चप्पल प्रसिद्ध है। बान्दा और आसपास का क्षेत्र और अगर पूर्ण रूप से देखा जाए तो सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड, जन्गली कान्टेदार पेड़, कान्टेदार झाड़ी, पहाड़ी और उबड़ खाबड़ पथरीली रास्ते जगह के लिए यहां के जूते उपयोगी हैं या यह कहें कि इन जूतों का आविष्कार आवश्यकता के अनुसार हो चुका है। जूतों के सामने बहुत ऊंचे गोल झब्बे होते हैं जिनके पैर में कान्टे नहीं लगते या लग नहीं पाते। उनकी नोकें गोल, मुड़ी हुई ऊपर को ओर होती हैं, वे पत्थर की ठोकर से बचने के लिए काफी मजबूत बनाए जाते हैं और उद्देश्य भी यही होता है। पीछे एड़ी का हिस्सा करीब 9 इन्च ऊंचा लम्बा पट्टा सा रहता है जिससे पैर के पिछले हिस्से की रक्षा होती रहती है। समृद्धि और आर्थिक आधार पर व कीमत के आधार पर जूतों पर बेल बूटे का काम ही होता है, चाहे इसे चमड़े के धागे से सिलाया जाए या सूती धागे से।

वस्त्र

कुछ समय पहले तक यहां मामूली दुपलिया टोपी लगाने का या एक छोटी सी अन्गोछी कालिया विशेष ढन्ग से सिर पर बान्धने का रिवाज था। यह पगड़ी प्रायः खोपड़ी के एक तरफ/बाजू पर रहती थी। बड़े समृद्ध पाग या मन्दील सिर पर बान्धा करते थे। जब से आवागमन के साधन और सन्चार व्यवस्था बढ़ी हैं तो बड़े–बड़े साफा बान्धने का रिवाज राजस्थान की तरह यहां भी शुरू हुआ है। किसी किसी जगह आज भी पगड़ी पाग या मन्दील के अलावा अन्य और किस्म की सिर की पोशाक पहनने / उपयोग की रोक है। विशेषतः देसी दरबार, राजा या किलेदार इसी तरह के राजा के अधिकारियों के यहां पर विशेष पोषाक पहनने का रिवाज है। अब दुपलिया टोपी के बदले फेल्ट कैप के तर्ज की टोपी और पगड़ी के बदले साफे का प्रचार प्रसार हो गया है। मिर्जई, फतुही, बगलबन्दी या बन्डी शरीर के ऊपर पहना जाता है। धीरे–धीरे यह खत्म होते जा रहे हैं और उसकी जगह जो झोला, कुर्ता का आम प्रचलन हो गया है और सामान्य रूप से यही कुर्ता पहनना शुरू हो चुका है। कोई–कोई कुर्ती, अन्गरखी या रुई से भरा हुआ कुर्ता/जैकेट भी पहनते है। रुई से भरा हुआ कुर्ता विशेष तौर पर सर्दियों के समय में पहना जाता है और इसे जैकेट कहा जाता है। रियासतों व जमीन्दारो के दरबारों में कुछ प्राचीन ढन्ग की पोशाक का व्यवहार किया जाता है। सम्भवत यह उस दरबार, उस घर के एक रियासती पोषाक/यूनिफॉर्म रहती रही हो। पेस्तर नीचे तक की लम्बी धोती अथवा पायजामें के बजाए कुची–ताला या परदनी अथवा घुटन्ना पहनते थे। अब तक टखनों तक तक नीची धोती का आम रिवाज हो गया है। जब कहीं देहात, जन्गल, पहाड़ आदि में होकर जाना पड़ता है तो खुटी खोंसना अथवा अर्थात धोती को ऊपर खींच लेना पड़ता है, नहीं तो कान्टो में यह सब फट जाती है। वर्तमान समय में यह सब चीजें केवल याद

करने की है। सब जगह आवागमन के साधन काफी अच्छे हो चुके हैं और यह अवस्था नहीं आती है। दरबार, कचहरी में कुर्ता पहनने का रिवाज/नियम है।

स्त्रियों के विशेष वस्त्र

स्त्रियां विशेष प्रकार के वस्त्र धारण करती है। धनी व समृद्धशाली परिवार की स्त्रियां गुजराती लहन्गा और चुनरी के साथ चोली पहनती थी। विशेष अवसर, विवाह आदि पर फैशन के तौर पर कभी कभी उपयोग कर लिया जाता है। विशेष अवसरों, विवाह आदि के वस्त्र सामान्य वस्तुओं से भिन्न होते हैं और सम्भवतः भिन्न ही रहेंगे। कुछ समय पहले तक साड़ी के साथ पेटिकोट पहने का रिवाज नहीं था। कुलीन घरों की स्त्रियां ही सामान्य धोतियां, साड़ी पहनती थी व पहनती है। परिस्थितिवश और काम करने के कारण अन्य जाति की स्त्रियां कान्छ लगाकर धोती पहनती थी व पहनती है। समयानुकूल, यह धोती गुलाबी, हरे व गुलाबी और हरे रन्ग की होती थी। सम्भवत रन्गों का मिश्रण और उनका स्थिरीकरण बहुत ज्यादा नहीं था। गुलाबी और हरे रन्ग धोने से नहीं छूटते थे अतः उपयोग होता रहा। विधवायें सफेद रन्ग के वस्त्र धारण करते हैं और अन्य आभूषण, रन्ग, महावर आदि का उपयोग इस श्रेणी के लिए वर्जित है।

बुंदेलखंड के बांदा, चित्रकूट और ललितपुर जिले में कोल आदिवासियों की अच्छी खासी तादाद है और कोल समुदाय जंगलों से जलाउ लकड़ी जड़ी बूटी आदि का संग्रहण करते हैं वनोंपज जो छोटे मात्रा में है जिनको लघु वनोपज (आंवला महुआ, चिरौंजी, गुड़मार पत्ती, नागर मोथा, बहेड़ा, मरोडफली, बेल, बेल गूदा तेंदूपत्ता, शतावर, लाख, गोंद शहद मोम जलाउ लकड़ी, जड़ी बूटी, लघु वनोंपजो का संग्रहण कर जीविका उर्पाजन करते है।)कहा जाएगा, बाजार में जाकर बेचते हैं

अरदली बाजार
कॉल्विन गंज
कटरा नाका
मनिहारी बाज़ार
छोटी बाजार
दुर्गा बाजार
चौक बाजार
कैथी बाजार
गूलर नाका
छावनी रोड

अर्दली/अरदली ;व्तकमतसलद्ध / ऑर्डरली बाजार

अर्दली ;व्तकमतसलद्ध / ऑर्डरली बाजार जो मिस्टर मायने;डंलदमद्धकी सराय के आगे से होकर जाता था उस वक्त मिस्टर रिचर्डसन के समय में बना था जो 1812 ई0 में गवर्नर जनरल का एजेंट था।

शहर के संदर्भ में रिचर्डसन के वारिसों ने राजा के तालाब को भराना शुरू कर दिया और मिस्टर मेनवारिंग तक जारी रहा। मेनवारिंग की बाजार, जिसकी सीमा पुराने तालाब तक थी, मनोरी गंज के नाम से जाना जाता है।

कॉल्विन गंज

कॉल्विन गंज को 1800ई0 में लेफ्टिनेंट गवर्नर के आगमन को यादगार बनाने हेतु इसका नाम रखा। यह उत्तर पश्चिम में है।

लोक हस्तशिल्प व व्यापार **Peoples Handicraft & Trade**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

कटरा नाका

कटरा नाका, यह उस समय का मुख्य बाजार व वार्ड था। बाजारों में जाकर सब्जी खरीद कर सब्जी बेचना मुख्य व्यवसाय है। अलावा इसके, बाकी बाजार में भोजनालय भी है।

मनिहारी बाज़ार

मनिहारी बाज़ार, जिसे मनिहारी लेन के नाम से जाना जाता है, बांदा के चौक बाज़ार के मध्य में स्थित है। कॉस्मेटिक उत्पादों और चूड़ियों की खरीदारी के लिए यह बाजार महिलाओं के बीच लोकप्रिय है। इस प्रकार बाजार की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से महिलाओं पर निर्भर है।

यह बाजार 80 साल पहले ब्रिटिश काल के दौरान स्थापित किया गया था। इस पर मनिहारों (एक ऐसा वर्ग जो मुख्य रूप से छोटे पैमाने पर घर का बना सामान बेचता है) का दबदबा था। इसलिए ब्रिटिश शासकों ने इस बाजार का नाम मनिहारी लेन रख दिया।

कुछ दुकानों से शुरू हुआ यह बाजार अब बहुत बड़ा हो गया है। दुकानों की कुल संख्या लगभग 80 हो गई है, जहां हर दिन लगभग 1/2 मिलियन रुपये का सामान बिकता है।

भारत में आपातकाल के दौरान एक बार इस बाजार का स्थान चौक बाजार से बदलकर रामलीला मैदान कर दिया गया था। लेकिन कुछ समय बाद ही इसे वापस अपने मूल स्थान यानी चौक बाजार में लाया गया। तब से यह चौक बाजार में ही है। इस बाजार में हिंदू और मुसलमान दोनों की बराबर की भागीदारी है।

बान्दा 2024 की धनतेरस पर बाजार में जमकर धन की वर्षा हुई। शुभ मुहूर्त देखकर शगुन खरीदने के लिए बाजार में भारी भीड़ उमड़ पड़ी। जमकर खरीदारी होने से व्यापारी भी बेहद खुश नजर आए। धनतेरस पर करीब पांच घंटे में करीब 50 करोड़ रुपये से अधिक की खरीदारी का अनुमान है।

सुबह से ही चौक बाजार, गूलरनाका, कैथी बाजार, महेश्वरी चौक, गूलरनाका तिराहा व छावनी रोड सहित अन्य सभी मार्केट में भीड़ उमड़ पड़ी। हालांकि दोपहर बाद चार बजे से लेकर रात नौ बजे तक बाजार ग्राहकों से खचाखच भर गया। अपने बजट के अनुसार महिलाओं व पुरुषों से लेकर युवतियों व युवाओं में शगुन खरीदने को लेकर उत्साह दिखा। किसी ने पूजा सामग्री, खील, बताशा झाडू, चम्मच, कटोरियां थाली, गिलास, भगोना, चम्मच, कटोरियां, डिनरसेट खरीदीं तो किसी ने बाइक, कार, सोने व चान्दी के सिक्के लक्ष्मी–गणेश की मूर्तियां पांच ग्राम से अधिक के सोने और चान्दी के सिक्के, लक्ष्मी–गणेश की चान्दी की मूर्तियां, सिन्हासन, पूजा थाल लेकर शुभ किया।

ऑटो मोबाइल की दुकानों को ग्राहकों के लिए आकर्षक ढन्ग से सजाया गया था। बान्दा में बाइक व कार के करीब आधा दर्जन शोरूम हैं। इनमें पूरे दिन खरीदारों की भीड़ रही। पहले से ही बाइक व स्कूटी, कार आदि बुक करा ली थी। धनतेरस पर शोरूम पहुंचे और वाहन उठाया।

बाजार में बीते वर्ष के मुकाबले इस बार ज्यादा कारोबार हुआ है।

<u>शजर पत्थर</u>

शजर की उत्पत्ति

प्रकृति का चमत्कार बान्दा का शजर पत्थर भी है।   प्रकृति द्वारा मानव जाति को दिया गया यह उपहार एक भूवैज्ञानिक आश्चर्य है जिसका बहुत उच्च और रत्नवैज्ञानिक मूल्य है। पृथ्वी के ज्वालामुखी युग में जब सब कुछ तरल और अर्ध–ठोस रूप में था, तरल खनिज (ज्यादातर मैंगनीज और लोहा) सिलिकॉन ऑक्साइड (एगेट) की परतों के भीतर इस तरह से जमा हो गए कि उन्होंने कई तरह के पैटर्न बनाए। झाड़ियों, पेड़ों, जानवरों और दृश्यों की तरह, जो जैसा देखे, यह एक विशिष्टता प्रदान करता है।

लोक हस्तशिल्प व व्यापार Peoples Handicraft & Trade

अन्य जनश्रुति– बान्दा की केन में पूरे भू–भाग पर पहाड़ हैं, इन्ही पहाड़ों के बीच अन्तर्मुखी ज्वालामुखी विद्यमान हैं, किन्तु नदी के शीतल जल के कारण वे ठण्डे रहते हैं। शजर /एगेट की परतों के बीच मैंगनीज व लौह खनिज का आकृति विशेष जमा हुआ द्रव्य पदार्थ ही है। बान्दा के कुशल, सिद्धहस्त, शिल्पकार–कारीगर जो कि पिछले चालीस वर्षों से इसे व्यवसाय के रूप में अपनायें हैं, वे जनश्रुति बताते हैं कि शजर की कोई भी पत्थर किसी दूसरे पत्थर के समानुपाती नहीं होता है। अर्थात प्रत्येक शजर दूसरे से भिन्न ही होगा। इसकी उत्पत्ति का दूसरा कारण यह है कि धरती के नीचे से लावा द्वारा ऊपर फेंका गया पदार्थ, जो प्राकृतिक रूप से रासायनिक क्रिया द्वारा ठोस पदार्थ मे जमने लगता है, उसमें अन्य तमाम धातुओं के साथ चान्दी की बहुतायत मात्रा होती है। उस अवस्था में चान्दी कैमरे के निगेटिव की तरह कार्य करती है। इसे लोग कार्बन–इफेक्ट कहते हैं। सूर्य की किरणों के माध्यम से पत्थरों की सतह के आसपास वनस्पतियों, पौधों, झाड़ियों, आदि का चित्र प्रायः इसके ऊपरी भाग मे फोटो की तरह अन्कित हो जाता है इस प्रक्रिया के बीच यदि कोई पशु पक्षी अथवा मनुष्य स्वयम् में गुजर जाये तो उसकी आकृति भी पत्थर के ऊपर उभर आती है।

शजर की उत्पत्ति के विषय में अनेक तरह के मन्तव्य सामने आते हैं, अन्य जनश्रुति है– धरती के अन्दर धधकते हुए ज्वालामुखी का लावा सिलिका रूप में जब ऊपर आता है, तो पहुन्चते पहुन्चते ठण्डा होने लगता है। तत्पश्चात् जब वह द्रव्य रूप में एकत्र होता है, उसी सन्योगवश वनस्पतियों के बीच उसके अन्दर अन्कुरित होकर प्राकृतिक रूप से पत्थर की आकृति में एकाकार हो जाते हैं फिर क्रमशः परत दर परत जमकर चित्र के रूप मे उभर आते हैं। अन्ततः ठोस परिवर्तित रूप की शजर की शक्ल एख्तियार कर लेता है।

भूवैज्ञानिक रूप से यह एगेट की श्रेणी में क्वाट्र्ज परिवार का पत्थर है जिसकी कठोरता ''मोह'' पैमाने पर सात है जो नीलम के करीब है। हालान्कि इसे अर्ध–कीमती पत्थर के रूप में वर्गीकृत किया गया है, लेकिन इसमें कीमती पत्थर के सभी तीन गुण पाए जाते हैं, यानी

दुर्लभता,
स्थिरता और
सुन्दरता।

इस पत्थर के बारे में मिथक हैं कि यह पहनने वाले को ताकत और मानसिक शक्ति देता है और पहनने वाले को एक टुकड़ा देता है और यहां तक कि सभी शक्तिशाली उससे प्रसन्न होते हैं; यह इस्लामी समुदायों द्वारा एक पवित्र पत्थर के रूप में प्रतिष्ठित है और इसे पहनने वाले लोगों के लिए एक अच्छा ताबीज़ है।

4C— Cut, Color, Clarity, and Carat Weight कट, रन्ग, क्लैरिटी(स्पष्टता) और कैरेट वजन– हीरे की गुणवत्ता का आकलन करने के लिए ळप्। द्वारा स्थापित सार्वभौमिक मानक हैं, जो हीरे के आकार (कट), रन्ग की कमी (रन्ग), आन्तरिक दोषों से मुक्ति (स्पष्टता) और भौतिक वजन (कैरेट) को देखकर उसकी सुन्दरता और मूल्य निर्धारित करते हैं।

इतिहास

लगभग चार सौ साल पहले बान्दा के नवाब (राजा छत्रसाल और राज नर्तकी/वेश्या मस्तानी के पुत्र) ने अपने कलात्मक पत्थर और जौहरी के काम के लिए एक सन्ग तराश (पत्थर काटने वाले) रुमदास को सन्रक्षण दिया था। एक बार अपने नियमित दौरे के एक गांव से गुजरते समय रेंड को तंबाकू पीने की इच्छा हुई, एक ग्रामीण ने उन्हें आग जलाने के लिए कपास के साथ एक पत्थर का टुकड़ा और लोहे की पट्टी दी। कलात्मक रुमदास ने इसका उपयोग करते समय पत्थर में एक बहुत ही अनूठा पैटर्न देखा। उन्होंने पत्थरों के कुछ और टुकड़े एकत्र किए और उन पर अपनी चालाकी का इस्तेमाल किया, उन्हें उस पर सुन्दर पैटर्न मिले। उन्होंने उन्हें चान्दी और सोने में जड़ा और अपने नवाब को भेन्ट किया, जिन्होंने इसके लिए उन्हें सम्मानित किया। यह है बान्दा के कतरनी पत्थर।

शजर पत्थर को संवारने की विधि

यह एक बहुत पुराने पारम्परिक तरीके से तैयार की गई निब है, जिसमें एक पतली स्टील की तार है जिसे कामन कहा जाता है। पत्थरों को खुन्टा नामक लकड़ी के पाटी–पत्थर पर रखा जाता है और इस धनुष द्वारा सिलिकॉन कार्बाइड पाउडर की मदद से 2 से 4 मिमी मोटाई में काटा जाता है। इन पत्थरों के टुकड़ों को अत्यन्त

सावधानी और सटीकता के साथ डिज़ाइन, ट्रिम, आकार और पॉलिश किया जाता है क्योन्कि जमाव केवल माइक्रोन मोटाई में होता है।

एक साधारण बेकार दिखने वाला कन्कड़ जब कुशल कारीगरों द्वारा साफ और गढ़ा जाता है, तो एक सुन्दर खतरनाक पत्थर बन जाता है, जिसकी छाप कल्पना से परे होती है। एक परिष्कृत और पॉलिश किया हुआ पत्थर जब कीमती धातुओं में जड़ा जाता है, तो वह महिलाओं के लिए खुशी और खजाना बन जाता है।

विविधता, गुणवत्ता और विलक्षणता ऐसी है कि कोई भी दो पत्थर किसी भी तरह से समान नहीं हैं। एक बार जब आपके पास कोई टुकड़ा होता है तो वह दुर्लभ और केवल एक ही होता है क्योंकि कोई भी उसका डुप्लिकेट पेश नहीं कर सकता। इसका उपयोग ज़्यादातर सजावटी उद्देश्यों जैसे पेंडेंट, इयर रिन्ग, अन्गुठियां, क्यूरियो आइटम जैसे पेपर वेट, पिल बॉक्स, सिन्दूरदानी आदि के लिए किया जाता है।

लुप्त शिल्प

बान्दा (भारत) को शजर के राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कारीगरों का गौरव प्राप्त है। उन्हें राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में सम्मानित किया जा चुका है। यह वास्तव में गर्व की बात है कि उनका पत्थर भारत में केवल बान्दा में ही तैयार किया जाता है। बान्दा का पत्थर अपने एकमात्र प्रतिस्पर्धी मोंटाना डेंड्राइट एगेट से कहीं बेहतर और बढ़िया है। इसमें निर्यात की बहुत सम्भावना है और यह विदेशी मुद्रा अर्जित कर सकता है, बशर्ते कारीगरों को उचित सरकारी सहायता और अवसर दिया जाए।

20वीं सदी की शुरुआत में एक समय था जब इस शिल्प में लगभग 200 कारीगर और कार्यशालाएँ शामिल थीं। अब मुश्किल से दसवाँ हिस्सा बचा है और वे भी वित्तीय और विपणन समस्या का सामना कर रहे हैं। उत्पादन लागत में वृद्धि और पुराने खरीदारों द्वारा कठिन सौदेबाजी के कारण कच्चा माल दुर्लभ और महन्गा होता जा रहा है, जिससे यह अनूठा शिल्प हमेशा के लिए लुप्त हो रहा है।

कीमत

यद्यपि भारत और विदेशों में हर जगह इसे सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त है, परन्तु इसका उचित विपणन और प्रचार–प्रसार अभी भी किया जाना बाकी है।

इसका बाजार मूल्य पत्थर पर छाप के आकार, पैटर्न और रन्ग पर निर्भर करता है। +3

प्रकृति ने जिसे कभी कुदरत का तोहफा समझकर लोगों को पहली नजर मे चमत्कृत कर देने वाले बेमिसाल पत्थर– शजर को अपनी किस्मत मान लिया था। वो ही समय की मार से ऐसा टूटा कि आज अपनी जमीन को ही खोने की तरफ अग्रसर है। तमाम बेशकीमती नगीनों और बुन्देलखण्ड की शान के अनुरूप इसकी ऐतिहासिक किवदन्तियों मे शामिल बुन्देलखण्डी कहानी की रफ्तार मे अध्याय बनकर दर्ज होने वालों में सबसे अनोखा प्रकृतिदत्त उपहार शजर ही है। वैज्ञानिक भाषा मे शजर को डेन्ड्राइट एगेट कहा जाता है। प्रशासन की उपेक्षा तथा नगीना व्यापार में इसकी अनदेखी के चलते अब ये उपेक्षा का शिकार है। भारत वर्ष में सिर्फ बुन्देलखण्ड के बान्दा जनपद में बहने वाली केन नदी में ही यह पाया जाता है।

बान्दा गजेटियर के अनुसार लगभग 300 वर्ष पूर्व मुगलकाल में शजर उद्योग को जबरदस्त सम्मान प्राप्त हुआ करता था। बुजुर्ग शजर व्यवसायी हामिद हुसैन जो कि अब इसे पार्ट टाइम तराशने का काम करते हैं, बताते हैं कि– नवाब, राजाओं के आकर्षण का केन्द्र ही शजर और उसकी खूबियां थी किन्तु नवाबी खत्म हो जाने के कारण व बहुत उंची कीमत के कारण, शजर की कद्र धूमिल होती चली गयी।

शजर एक फारसी शब्द है। जिसका अर्थ है कि– शाख, टहनी या छोटा सा पौधा। इसे आम बोलचाल की भाषा में हकीक –ए– शजरी भी कहते हैं। बान्दा शजर व्यवसायी डा0 सतीश चन्द्र भट्ट की कहानी माने तो– कार्तिक पूर्णिमा की रात मे शजर पत्थर प्राकृतिक रूप से जल की सतह पर आ जाते हैं। प्रायः जब उगते हुए सूरज की पहली किरण शजर के ऊपर पड़ती है तो उसके सामने आने वाली प्रत्येक वस्तु इसके ऊपरी भाग में चित्र स्वरूप प्रकाशित हो जाती है।क्या? सन् 1857ई0 के प्रथम स्वाधीनता सन्ग्राम के दौरान शजर पहली मर्तबा अन्ग्रेजी हुकूमत की नजर में आया था। जब महारानी विक्टोरिया के राज्याभिषेक के समय इसे काफी तरजीह दी गयी थी। सन् 1911ई0 मे

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

विक्टोरिया कोरोसन प्रदर्शनी में महारानी इस अद्भुत पत्थर की बनावट पर इतनी मोहित हो गयी थी कि उसे अपने साथ ब्रिटिश सन्ग्रहालय की शोभा बढ़ाने वास्ते लेकर गयी थी, जो आज भी ब्रिटिश सन्ग्रहालय में शोभायमान है। नगर के ही एक अन्य व्यवसायी जिन्हे शजर की नक्काशी करने, ताजमहल, कालींजर का किला शजर से ही बनाने के लिए राज्य स्तरीय पुरूस्कार प्राप्त हो चुका है। द्वारिका प्रसाद सोनी (सचिन ज्वैलर्स) के मुताबिक ढाई दशक पूर्व ईरान, सउदी अरब, दोहा– कतर, अफगानिस्तान की सरहद पार भी शजर के सौदागर बान्दा आकर मुंह मांगी कीमत मे इसे ले जाते थे। ज्योतिषियों के अनुसार जिन राशियों में हीरा, ओपल, हकीक, पुखराज पहनने की सलाह दी जाती है उनके लिए भी शजर पहनना लाभदायक होता है। किन्तु आज वक्त की धुन्ध एवम् सामन्त शाही व्यवस्था, एकाधिकार का बाजारीकरण शजर उद्योग को बान्दा नगर से लगभग खत्म करने के अन्तिम सोपान तक पहुंच चुका है। मशीनीकरण की समृद्धि में जो कच्चा माल पहले एक माह में तैयार होता था आज वही पांच दिनों मे तैयार हो जाता है।

तैयार माल की खपत न होने से ही व्यवसायी, कारीगर इससे विमुख होते जा रहे है। स्वयम् सेवी सन्गठन प्रवास ने अपने सर्वेक्षण में सन्कलित आंकड़ों से यह पाया है कि एक अच्छा शजर जो पहले मुंह मांगी कीमत में बिकता था अब वही मात्र 25 रूपये में मिल जाता है जबकि साधारण पत्थर की कीमत 10 से 15 रूपये है। कारीगरों को एक दिन की दिहाड़ी मजदूरी 100 से 150 रूपये ही मिलती हैं, वहीं कारखाना मालिकों को 2500 से 3000 के बीच ही इस उद्योग से आमदनी है। यदि वे पूरी तरह शजर पर ही निर्भर हों तो घर खर्च चलाना भी दूभर होगा। आज आवश्यकता है कि सरकार इसे सन्रक्षण प्रदान कर बुन्देलखण्ड के प्रमुख कुटीर उद्योग में शामिल करें जिससे टूटते शजर की पहचान को बरकरार रखा जा सके। प्रस्तुत आन्कड़ों से खुद–ब–खुद हालात–ए–शजर बयान हो जाते हैं।

शजर पत्थर/ डेन्ड्राइट एगेट









सन्दर्भ सौजन्य साभार

+1 सान्स्कृतिक बुन्देलखण्ड– अयोध्या प्रसाद कुमुद

+2 चित्र इदकं ीपेज बतंजि

+3 अपने ही घर से हुआ बेघर– शजर (बुन्देलखण्ड) बान्दा
सर्वे रिर्पोट दिनान्क 28 फरवरी 2010 के अनुसार – प्रवास सोसाइटी
बुन्देल खण्ड अनुसन्धान पटल